वर्ष 30 अंक : 2 15.3.2007 गुरुवार (मार्च - अप्रैल) प्रति अंक : 10.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री,११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निमंत्रण

आओ,

परम पूज्य गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन के अनमोल अवसर पर
हमारे दिव्य कुनबे के सभी सदस्य मिल कर
प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के करकमलों से
प.पू. साहेबजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी,
प.पू. निर्मळस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई
एवं
प.पू. भरतभाई व ताड़देव के योगेश्वरों की निश्रा में
दिल्ली – अशोकविहार के श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर में
ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की संगमरमर की मूर्ति की
एवं
ब्रह्मस्वरूप काकाजीस्वरूप प.पू. दिनकरभाई की चित्रप्रतिमा की
प्राणप्रतिष्ठा के अद्भुत दर्शन का लाभ लें
और
'गुणातीत समाज के आद्य सर्जक'
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का
ऋण यत्किंचित् अदा करें।

– गुणातीत कुनबा, दिल्ली

कार्यक्रम

24 मार्च, शनिवार *'07*

सुबह *9:00* से *12:00* – यज्ञ
सायं *6:00* से *9:00* – सत्संग सभा

25 मार्च, रविवार *'07*

सुबह *9:00* से *12:00* – ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि पप्पाजी
एवं
प.पू. दिनकरभाई की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा
सायं *5:00* से *9:00* – प.पू. गुरुजी के *70* वें प्राकट्य दिन का उत्सव

प्रभु के रंग से भरा मार्च का एक अनूठा 'सूर्योदय'!

१३ मार्च, १९३७... छः बज कर ५२ मिनिट ४९ सैकण्ड पर **सूर्योदय के साथ-साथ** मुंबई के पॉलीक्लीनिक में **प.भ. धनप्रसादभाई महेता** को गृहस्थाश्रम के दस वर्ष के बाद **सौ. ललिताजी** की कोख से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई... **मानो एक और 'सूर्य' प्रगटा!** उन्होंने – उनके पूरे परिवार ने खूब खुशी महसूस करी ही होगी; लेकिन भविष्य में **प.पू. गुरुजी** के रूप में 'सूर्य' बन कर अनेक जीवों को प्रभु के उजाले से भर देने एक **'विभूति'** ने उनके घर देह धरा है, इस बात से तो वे अनभिज्ञ ही होंगे। यूं १९३७ की वो फागुन शुक्ला-१ संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों... अरे! जाने-अनजाने अनेकों के जीवन में प्रभु का रंग भरने आई। हम उत्तरभारत के वासियों के तो भाग्य का पार नहीं कि कल्पनातीत यह खुशी प.पू. काकाजी ने हमारे हिस्से दी।

वर्षों पहले प.पू. गुरुजी जगरांव (पंजाब) के पास स्थित गुरुद्वारा **'नानकसर'** में दर्शन करने गए थे। इस गुरुद्वारे की स्थापना **बाबा नंदसिंहजी** ने करी थी। यहाँ के भूखंड में उनके द्वारा करी घोर तपस्या के स्थान को **'सचखंड'** कहते हैं। वहाँ भीतर दर्शन करने जाने के लिए शायद कुछ नियम इत्यादि होंगे, जो कि गुरुमुखी में एक बोर्ड पर लिख कर रखे हुए थे... प.पू. गुरुजी तो सहज ही इस महापवित्र स्थल के दर्शन करने जाने लगे। तो वहीं खड़े द्वारपाल ने उन्हें रोका। यह देख कर वहाँ उपस्थित गुरुद्वारे के ही एक संत ने द्वारपाल को टोकते हुए कहा –

'अरे! तू इन्हें क्या भीतर जाने से रोक रहा है? ये तो खुद भगवान हैं।'

भगवान स्वामिनारायण ही शायद ऐसे प्रसंगों द्वारा हमें टटोल कर समझाना चाहते होंगे कि **प.पू. गुरुजी** के रूप में हमें जो **'विभूति'** मिली है, उन्हें मामूली समझने की गलती ना करें। पर, इनसे जुड़ कर जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाएं। और... **राजकोट के पूर्व सांसद** व हमारे **आत्मीय स्वजन प.भ. रामजीभाई मवाणी** के अतंर के निम्न उद्गार तो हमें जबरन् अंतर्दृष्टि करने का मौका दे रहे हैं –

'...मैं वैसे राजकोट में रहता हूँ। ***हर तीन महीने*** *राजकोट से* ***मेरा इस मंदिर में आना बहुत जरुरी है।*** *इसीलिए जरुरी है कि* ***इसमें मेरा ही कुछ स्वार्थ है।*** *बैटरी चार्ज करना पड़ता है। ...मेरी बैटरी तीन महीने में खत्म हो जाती है – राजकोट में। तो, वो रीचार्ज करने के लिए मुझे गुरुजी के पास आना पड़ता है – कम्पलसरी। वो बैटरी रीचार्ज करने मैं आज यहाँ आया हूँ...*

मैंने जीवन में बहुत स्ट्रगल करी है – स्ट्रगल करके बड़ी-बड़ी हस्तीयों के सामने भी मैंने लोकसभा के चुनाव जीते हैं... इससे मेरे अनुभव हैं... मैं बहुत से धर्मस्थलों में गया हूँ – कई जगह पर गया हूँ - संतों महंतों को मिला हूँ। *लेकिन* ***सब जगह के तारतम्य पर*** *मुझे यह हुआ कि – कोई एक जगह पर मुझे शांति कहाँ मिलती है? वो जगह की मैं कंठी पहनूँ।* ***आज मुझे कहते हुए हर्ष होता है कि गुरुजी में वो दर्शन मुझे हुआ है। कोई जगह की टीका नहीं*** *कर रहा –* ***सब अच्छे हैं। लेकिन 'सर्वोत्तम' होना चाहिए।*** *'सर्वोत्तम' को हम सिलेक्ट करते हैं – क्योंकि* ***हम बुद्धिजीवी हैं*** *– हम में तर्क है –* ***सब चीजें हम समझ कर करते हैं*** *और उसी तर्क पर – उसी समझ पर - उसी एक्सपीरियन्स पर* ***गुरुजी के चरणों में आज मेरा जीवन अर्पण कर दिया है।*** *मैं चाहता हूँ आप भी गुरुजी के चरणों में अपना जीवन अर्पण करें...*

कोई आदमी सुखी नहीं है, सब को समस्याएँ हैं... पैसामात्र से सुख नहीं है। मानसिक शांति अत्यंत आवश्यक है... हम चाहते हैं कि हमारा मन स्वस्थ रहे; जब तक जिए, तब तक सुख से जिएं। वो सत्संग के द्वारा मिलता है। इसलिए ***संतों के साथ हर दिन – हर शाम सत्संग***

होना जरुरी है। *इस मंदिर में – इस जगह पर गुरुजी के द्वारा सत्संग रोज हो रहा है...*

'स्वामिनारायण धर्म' का दिल्ली में इतना प्रचार करना वो बहुत कठिन बात है। ***इधर तो लोग बहुत बुद्धिजीवी हैं।*** *गुजरात से आकर दिल्ली में इतना बड़ा मंदिर किया है। यह सफलता की एक प्रतीति है - एग्ज़ाम्पल है और... वो सफल हुए हैं, हमारे सामने सफल दिखाई देते हैं। इसलिए हम इनकी शरण में आए हैं ...* ***मैं हर क्षेत्र में तन-मन और धन से सुखी हूँ। टाटा-बिड़ला से भी सुखी हूँ। इसकी वजह मैं गुरुजी को देता हूँ, उनका आशीर्वाद है मुझे...'***

कोई भी मुक्त चाहे वह किसी कार्य हेतु ही प.पू. गुरुजी के संपर्क में क्यों ना आया हो? प.पू. गुरुजी की सहजता, सादगी व निर्मल जीवनशैली सभी को यूं छू जाती है...

राजकोट के **'शिल्पा प्रोसेस'** वाले **श्री रवजीभाई –** जिन्होंने प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी होने के समय प.पू. काकाजी का सोविनियर बनाया था, वे प.पू. गुरुजी का दर्शन करने मंदिर आते रहते हैं। उन्हें दिल्ली मंदिर का माहौल व प.पू. गुरुजी की रीति – नीति बहुत स्पर्श कर गई थी। वे जानते भी हैं कि करीब १५००-२००० हरिभक्तों का यहाँ एक छोटा-सा ही ग्रुप है। सो, दिल्ली मंदिर से किसी बड़े ऑर्डर वगैरह की आशा से नहीं, बल्कि वे प.पू. गुरुजी का दर्शन करने आते रहते हैं। एक बार मंदिर आने पर बातचीत दौरान श्री रवजीभाई बोले भी कि –

मैं तो काफी जगह घूमा हूँ, पर यहाँ का माहौल मुझे कुछ अलग-सा लगता है, इसीलिए मैं यहाँ आता हूँ।

गुरुहरि योगीजी महाराज कहते थे कि –

'सच्चे साधु की पहचान यही है कि उसे मिलते ही मिलने वाला उसके पीछे लट्टु हो जाए... वह 'साधु' का उसे आकर्षण लग जाए।'

प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए कईयों को ऐसी प्रतीति होती है कि काफी समय से हम जो सच्चे गुरु की तलाश में थे, वह तलाश आज पूरी हुई। किसी के घर भी प.पू. गुरुजी जाते हैं और उस मुक्त के रिश्तेदार, मित्रगण जो प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आए होते हैं, वे फिर फोन करते हैं कि –

तुम्हारे गुरुजी का चेहरा तो हम भुला ही नहीं पाते।

लुधियाना से प.पू. काकाजी के समय के **हमारे पुराने जोगी प.भ. कमलदेवजी**, उनकी पत्नी सौ. मीना व पूरा परिवार प.पू. गुरुजी से अत्यधिक भक्ति-भावना, निष्ठा से जुड़ा हुआ है। पिछले २३ दिसंबर को प.भ. कमलभईया व सौ. मीनाभाभी की २५वीं शादी-सालगिरह होने के कारण वे सब दिल्ली मंदिर आए थे। तब उनकी साली साहिबा **सौ. पाली** भी अपने परिवार के साथ दिल्ली आई थी... आश्चर्य की बात है कि उन्हें स्वप्न में एक महीना पहले ही यहाँ के नजारे का दर्शन हो गया था! प.पू. गुरुजी के अंतर्यामी होने के तीन-चार अनुभव भी हुए... सो, **सौ. पाली और नरेन्द्रजी** का परिवार भी प.पू. गुरुजी के साथ अत्यधिक भावना से जुड़ गया।

इसी दौरान जब प.पू. गुरुजी का लुधियाना जाना हुआ तो वहाँ सौ. मीनाभाभी व सौ. पाली के यहाँ उनकी एक सहेली **सौ. आशाजी** भी प.पू. गुरुजी का दर्शन करने आईं... पहली बार प.पू. गुरुजी के दर्शन करते ही सौ. आशा दीदी को भीतर में एकदम शांति हो गई और वो सहज बोल उठीं कि –

'प.पू. गुरुजी के दर्शन करके मेरी भटकन खत्म हो गई...'

वाकई, प.पू. काकाजी द्वारा कही हर एक आर्षवाणी सत्य हो रही है... जो-जो आशीर्वाद प.पू. काकाजी ने दिल्ली मंदिर के लिए दिए वे सभी आज सत्य हो रहे हैं।

सो, प.पू. गुरुजी का प्राकट्य उत्तर भारत के मुक्तों के लिए खूब महत्त्व रखता है। और... इस वर्ष तो प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन हमें अनोखी स्मृति देने के लिए खूब विशेष है; क्योंकि अब की बार तो **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज** की संगमरमर की मूर्ति एवं

काकाजीस्वरूप प.पू. दिनकरभाई की चित्र प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा करके **प.पू. गुरुजी का ७०वां प्राकट्य दिन** मनाएंगे।

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने **प.पू. गुरुजी को** जब **साधु की दीक्षा** दी थी, तब **गुरुहरि योगीजी महाराज का ७०वाँ प्राकट्य उत्सव** मनाया जा रहा था और... अपने जीवन के **इसी पड़ाव पर** प.पू. गुरुजी **योगीस्वरूप प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा** करवाने जा रहे हैं!

७० वर्ष की उम्र में भी **'ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा'** करने की प.पू. गुरुजी की नित्य नवीन उमंग-उत्साह व गुणातीत स्वरूपों के प्रति भक्ति अदा कर लेने की जुंबिश तो एक नवयुवक को भी शरमा देती है। नवनिर्मित मूर्ति में पर्फेक्शन लाने प.पू. गुरुजी **सात-सात बार** जयपुर गए! दोपहर तक में जयपुर पहुँच कर, खूब बारीकी से व सभी ओर से मूर्ति को निहार-निहार कर सारी कमियाँ ठीक करवाते। शाम को जयपुर से वापिस आने निकलते और रात को करीब साढ़े ग्यारह-बारह बजे दिल्ली पहुँचते। उनके साथ गए हरिभक्त-बहनें प.पू. गुरुजी का यह अथक् परिश्रम व भक्ति देख कर दंग रह जाते कि – गुरुजी को कितनी थकान लगती होगी?

यूं वे अपने जीवन से-वर्तन से स्वरूपों के प्रति भक्ति अदा करने की हमें राह दिखा रहे हैं। इससे भी अधिक, हर एक क्रिया करते हुए चारों पहलू से सोचने की उनकी कार्यशैली हमें बहुत कुछ सिखा जाती है।

आज प.पू. पप्पाजी व प.पू. दिनकरभाई की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा करवाते हुए गुणातीत समाज के सभी स्वरूपों व वड़ील मुक्तों को उसमें शामिल होने का आग्रह करने के पीछे प.पू. गुरुजी की एक ही चाहना-भावना है कि प.पू. काकाजी के अंतर की प्रसन्नता उन्हें मिल जाएगी; क्योंकि वे यही चाहते थे कि **पप्पाजी में तुम मुझे ही देखो** और **शुद्ध गुणातीत परंपरा में से किसी को भी गौण करने की हम भूल ना करें।**

यह हम सभी का खूब अहोभाग्य है कि – **बॅप्स के हर मंदिर-हर केन्द्र में 'आद्यसंस्थापक' गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्तियाँ प्राईम लोकेशन पर स्थापित करके संस्था ने आद्यसंस्थापकों का परिचय 'अमर' कर दिया है – यूं राजधानी दिल्ली के हमारे केन्द्र में प.पू. काकाजी की लाईफ साईज़ मूर्ति के साथ प.पू. पप्पाजी की भी ठीक ऐसी ही मूर्ति का दर्शन अब हमें 'गुणातीत समाज के आद्यसर्जक' के रूप में निरंतर होगा और दिव्य युगलबंधु की ये मूर्तियाँ कईयों को कई अनुभूतियाँ कराएंगी।**

यूं भी तो बृहद् गुणातीत समाज में यह अद्भुत घटना है; क्योंकि जैसे **राजकीय क्षेत्र** में स्वतंत्र भारत के सर्जन में **सरदार वल्लभभाई एवं विठ्ठलभाई** का जो अविस्मरणीय श्रम है – ठीक उसी भाँति **'गुणातीत समाज के आद्यसर्जक' प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी** को भी **आध्यात्मिक क्षेत्र** में भुला नहीं पाएंगे....

प.पू. काकाजी की कही एक बात प.पू. गुरुजी अकसर दोहराते हैं कि – ***'सर्वदेशीयता में जाए बिना एकांतिकभाव सिद्ध नहीं होगा।'***

सो, एकदेशस्थ ज्ञान से ना चल कर **'एक यानि अनंत'** के सिद्धांत पर प.पू. गुरुजी ने सर्वदेशीयता अपनाई है व संबंध वाले मुक्तों को भी मानो उसी की घुट्टी पिलाई है!

हाँ, **ध्यान-सेवन हमें मिले एक ही स्वरूप का करना है, पर सेवा व भावना अन्य स्वरूपों के प्रति सरीखी ही रखनी है। जब सभी मुक्तों में भी 'महाराज' को देखने की हम बातें करते हैं, तो महाराज को अखंड धारे हुए गुणातीत स्वरूपों में क्यों 'फर्क' रखना?**

प.पू. काकाजी की जीवनशैली तो हमने देखी है। वे सर्वदेशीय होते हुए भी सिर्फ गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य योगीजी महाराज के ही थे और तभी तो

संतों के एक इशारे पर अपनी कीमती गाड़ी आचार्य महाराज के लिए अर्पण कर देने में इन्होंने तनिक भी देर नहीं लगाई थी।

दरअसल प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी का जीवन-उनके सिद्धांतों को खूब करीब से निहारा है। तभी तो हाल ही में प.पू. पप्पाजी के अस्थिविसर्जन निमित्त अमेरिका से खास आए **प.पू. दिनकरभाई** द्वारा २६ फरवरी' को दिल्ली की दूरी का जिक्र करते हुए करी निम्न बात को प.पू. गुरुजी ने कई बार दोहराई –

'प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा के अवसर पर तो यदि हम अक्षरधाम में भी हों, तो वहाँ से भी हमें मूर्तिप्रतिष्ठा के इस अवसर पर यहाँ पहुँच जाना ही है।'

सभी ने देखा है कि १९९४ में दिल्ली मंदिर में प.पू. काकाजी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा करने की जो उमंग-जो भावना प.पू. गुरुजी के मुखारविंद पर देखी थी, वैसी ही आज प.पू. पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा कराने दिखाई देती है। सच कहें तो, उनसे जुड़े संतों, सेवकों, बहनों व हरिभक्तों के कार्य में आज यत्किंचित् जो भी लगन, स्पीड व पर्फेक्शन नज़र आता होगा, वह प.पू. गुरुजी की कार्यशैली देख-देख कर बना है। प.पू. गुरुजी कई बार अपनी बातों दौरान बताते हैं कि बापा पूजा के बाद 'बादाम पूरी' के छोटे-छोटे टुकड़े का प्रसाद देते थे... प्रसाद के उस छोटे टुकड़े के लिए प.पू. गुरुजी रोज सुबह 'तड़के' ग्रांटरोड से पैदल 'तुरके' कपोलवाडी-सी.पी. टेंक बापा के पास जाते! इससे पता चलता है कि **जो करने की-पाने की उन्हें लगन हो, उसे हल करने वे कोई भी श्रम लेने-उठाने तत्पर रहते हैं।** प.पू. गुरुजी ने अनेक बार सभा में हमें यह कहा है कि –

हमारी गाड़ी जिस ढंग व रफ्तार से जगत में चलती होगी, उसी प्रकार सत्संग में भी चलेगी – संत से संबंध भी करेगी। सिर्फ ट्रॅक स्वीचऑवर हो जाती है। *अगर* ***जगत में हम लापरवाह व आलसी होंगे – समय के पाबंद नहीं होंगे, तो सत्संग में भी यूं ढीली-ढाली चाल ही चलेंगे।*** *अगर* ***जगत में पर्फेक्ट व पंक्च्युअल होंगे, तो हम सत्संग में भी ऐसा जीएंगे।***

गुणातीत समाज में सभी गुणातीत स्वरूपों और पुराने-नए सभी मुक्तों के मुँह से हमने अनेक बार सुना है कि –

प.पू. गुरुजी यानि – निखालस! तनिक भी शो-शा या दिखावा नहीं। एक बार सहज ही अपना उदाहरण देते हुए प.पू. गुरुजी ने निखालसभाव से बताया भी था कि –

''मुझे पिक्चर देखने का खूब शौक था। घर से यूं बार-बार पिक्चर देखने के लिए रज़ामंदी मिलनी मुश्किल थी; सो दोस्तों के साथ मिल कर एक तरकीब निकाली। इन्टर्वल तक की डेढ़ घंटे की पिक्चर स्वयं देख कर किसी दोस्त को वो टिकट दे देता; तो दूसरे दिन उससे आगे की – इन्टर्वल के बाद की डेढ़ घंटे की पिक्चर दोस्त से टिकिट लेकर मैं पिक्चर पूरी करता...

'मुग़ले आज़म' पिक्चर मैंने ३२ बार देखी थी!! एक बार थियेटर की बॉक्स ऑफिस से ३:०० से ६:००, ६:०० से ९:०० और ९:०० से १२:०० – यूं तीन शॉ की टिकिट माँगी और गुज़ारिश करी कि मुझे बार-बार सीट बदलनी ना पड़े, सो एक ही सीट दे दीजिएगा। बुकिंग ऑफिस के अंदर बैठे मैनेजर ने इत्तफाक यह सुनते ही वीन्डो के पास आकर आश्चर्य से पूछा कि क्या तीनों शॉ तुम ही देखने वाले हो? तो मैंने कहा – हाँ, मैं ही देखने वाला हूँ। दूसरे शॉ में थियेटर का मैनेजर खुद देखने आया कि सच में उस सीट पर मैं ही हूँ क्या। मुझे वहीं बैठा देख कर वह भौंचक्का हो गया और तीसरे शॉ में तो उसने खुश होकर मुझे 'कोका कोला' पिलाई थी।''

सच, प.पू. गुरुजी ने पिक्चर जिस लगन व एकाग्रता से देखी थी, उसी तरह सत्संग में वे प.पू. बापा व प.पू. काकाजी की मूर्ति को भी खूब लगन-एकाग्रता से चिपके रहे। **प.पू. काकाजी** कई बार कहते थे –

मुकुंद की मॅमरी फोटोग्राफिक है, तुरंत क्लिक हो जाता है।

यूं उन्होंने बापा व काकाजी का दर्शन ऐसी लगन से किया-उनके सिद्धांतों को भी ऐसी दृढ़ता से पकड़ा कि फलस्वरूप आज खुद उनका स्वरूप ही बन गए!

प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी के पास-सभी गुणातीत स्वरूपों के पास कभी ऐसा नहीं रखा कि मैं उनके पास मेरी अच्छी इमेज बनाऊँ या अच्छा इम्प्रेशन जमाऊँ। जैसे वे अंदर हैं, वैसा ही बाहर रखा... तभी तो वे सभा में भी यूं खुलेआम अपनी ऐसी कोई बात कह देने हिचकते नहीं हैं, जिसे सुन कर भले ही उनके बारे कोई गलतफ़हमी कर ले कि 'अरे! गुरुजी ऐसे थे!' पर दूसरी ओर अक्लमंद मुक्तों को प.पू. गुरुजी की यही अदा अपील कर जाती है कि अहोहो! गुरुजी इतने बड़े हैं, फिर भी कितने निखालस मन से अपने बारे की वे यूं बात कर देते हैं।

अपने सेवकों-शिष्यों के सामने ऐसी बातें खोल-खोल कर बताना–वह तो कोई विरल साधु–जिसे अपने बड़प्पन का ज़रा-सा भी आभासमात्र ना हो, वो ही कर सकता है।

१३ मार्च २००६ को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन था... प.पू. गुरुजी ने इस दिन शाम तक में सब हरिभक्तों को बिठा कर चार बार २०-२० मिनिट का भजन कराया। इतने फोन आने, हरिभक्तों का आना-जाना... पर मानो प.पू. गुरुजी को स्वयं की कोई 'अस्मिता' ही नहीं...

प.पू. काकाजी को स्वधाम गए आज २१ वर्ष हो गए... पर, इन २१ वर्षों में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी द्वारा अपनी कमी हमें महसूस नहीं होने दी। इससे ही पता चलता है कि उन्होंने काकाजी को धारा हुआ है – अखंड प्रगट रखा है और पल-पल काकाजीमय जीवन जीते हैं... प.पू. काकाजी के काम को आगे बढ़ाना ही उनका हर एक उद्यम है। कोई भी भक्त कैसी भी समस्या लेकर आए, पर हर संजोगों में भजन का ही एकमात्र उपाय और प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि की परिक्रमा करने कहते हैं।

वाकई, प.पू. गुरुजी खूब सिन्सियर हैं। प.पू. काकाजी की ही मर्जी में अपना अस्तित्व लयलीन कर देने की उन्होंने एकमात्र चाहना रखी है। प.पू. गुरुजी को मूली बिलकुल पसंद नहीं थी। पर प.पू. काकाजी को मूली खूब पसंद है, यह पता चलने पर उन्होंने सोचा कि हम बोलते तो हैं कि – **'महबूब की हर चीज महबूब होती है'** और हम भजन भी तो गाते हैं – **'गमतुं तारूं मने गमे एवो निश्चय दृढ़ थई जाए...'** – तो मुझे मूली 'भा' जानी ही चाहिए। और... उन्होंने उसे अपनी पसंद बना दी! यूं, प.पू. गुरुजी ने इतना जाग्रत रह कर प.पू. काकाजी की स्थूल रूप से छोटी-सी दिखती पसंद को भी अपने जीवन में कैसा ढाला है? सो ही, प.पू. काकाजी की आंतरिक मर्जी के मुताबिक जीने भी वे पल-पल सजग रहते हैं!

प.पू. गुरुजी ने हमेशा प.पू. काकाजी के हर छोटे से सूचन को भी खूब ध्यान में लिया है और साधकों के लिए एक आदर्श रखा है। १९८५ में दिल्ली मंदिर की जमीन मिलने के बाद प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को सहज ही कहा कि – *अबकी मैं फॉरेन से वापिस आऊँ, तब तक में यहाँ एक चौकड़ी बनवा देना।* बाह्यदृष्टि से देखें तो वहाँ चौकड़ी बनाने का कोई औचित्य ही नहीं था। लेकिन, प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की आज्ञा ध्यान में ले करके वह बनवा ही दी। दिसंबर १९८५ में प.पू. काकाजी आख़िरी बार दिल्ली आए थे; उन्होंने वह चौकड़ी बनी देखी, तो खूब राजी हो गए। इस प्रसंग से हम यही सोचें कि सत्पुरुष के वचन को झेलने की हमारी ऐसी लगन है क्या?

प.पू. काकाजी ने हमेशा मुक्तों में बापा का संबंध ही निहारा है और उनसे वैसे ही वर्ते हैं। इसी तरह प.पू. गुरुजी की भी केवल संबंध वाली दृष्टि है। पिछले दिसंबर में प.पू. गुरुजी 'पवई' गए थे। वहाँ छोटी-सी सभा आयोजित हुई थी। तब **प.भ. गिरिशभाई** ने कहा था – *'प.पू. काकाजी के संबंध वाला कहीं का भी हो, पर गुरुजी उसमें प.पू. काकाजी का ही दर्शन करते हैं। प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद मैं दिल्ली गया था, तो प.पू. गुरुजी*

*मुझे दिल्ली मंदिर के लिए मिली जमीन के प्लॉट पर ले गए। वहाँ सेवक से फूलों की थाली मंगवाई और मुझे कहा कि – **गिरिश, मंदिर की जमीन के चारों ओर ये फूल छाँट दे...** मैं तो आश्चर्य में रह गया कि मैं एक छोटा-सा सेवकमात्र और प.पू. गुरुजी कितने बड़े... लेकिन उन्होंने सिर्फ यही देखा कि गिरिश प.पू. काकाजी के संबंध वाला आया है ना? उन्होंने मेरे अंदर प.पू. काकाजी को देखा।'*

प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी का कैसा सेवन किया होगा कि ऐन मौके पर उनके जैसी ही उनकी 'ढब और जीवनशैली' हर एक को स्पर्श कर जाती है...

★ प.पू. काकाजी पहली बार **साहिबाबाद प.भ. आर. के. अग्रवालजी** के यहाँ जाने वाले थे। उन्होंने अड़ोस-पड़ोस के पचास-साठ जनों को दर्शन करने बुलाया हुआ था। परंतु प.पू. काकाजी शाम को छः बजे के बजाय करीब रात को १०:०० बजे साहिबाबाद पहुँचे... अड़ोसी-पड़ोसी तो राह देख कर वापिस चले गए... प.पू. काकाजी आए, खाना खाया और फिर कथावार्ता वगैरह करने के बजाय प.भ. आर.के. अग्रवालजी के घर में घूमते हुए उनसे व्यावहारिक प्रश्न पूछने लग गए कि – 'यह मकान कैसे बनाया? कितनी लोन लेनी पड़ी वगैरह...' यह सुन कर प.भ. आर.के. अग्रवालजी की आँखों में तो पानी आ गया कि मेरे सगे माँ-बाप ने भी आज तक यह बात कभी नहीं पूछी कि 'मकान बनाने तुम पैसे कहाँ से लाए? तुम्हें मुश्किल पड़ी होगी वगैरह।' यूं प.पू. काकाजी उनके जीव में बैठ गए।

वाकई, ऐसे **युगपुरुष धरती पर जनरल मास के लिए नहीं, बल्कि अपने भक्तजनों के लिए ही आते हैं।** जैसे कि भगवान श्रीकृष्ण का जीवन देखें तो बचपन में ग्वाल-बाल व गोपियों के साथ बीता और बाद में मानो पाँच पांडव व द्रौपदी के लिए ही जिए! **हमने कभी भी ऐसा नहीं सुना है या भागवत में कहीं ऐसा नहीं लिखा गया कि पाँच-पच्चीस हजार लोग बैठे थे और भगवान श्रीकृष्ण संबोधन कर रहे थे!**

प.पू. गुरुजी भी कहीं सत्संग के प्रचार-प्रसार के लिए नहीं जाते, ना ही उन्होंने अपने सेवकों – मुक्तों के पास ऐसा आग्रह रखा है। हाँ, प.पू. काकाजी द्वारा भेजे **निष्ठा वाले मुक्तों की हर प्रकार से परवरिश करने में वे कोई कसर बाकी नहीं रखते।**

★ **प.भ. वच्छराजजी** करीब ३० साल पहले प.पू. गुरुजी के कॉन्टॅक्ट में आए; तब वे ३०० रुपये की नौकरी करते थे। थोड़े साल नौकरी चलती रही... फिर प.पू. गुरुजी ने एक दिन उन्हें कहा कि तुम नौकरी कब तक करते रहोगे? इससे अच्छा है कि तुम अपना व्यापार करो। पर, प.भ. वच्छराजभाई तो अपना व्यापार खोलने की हिम्मत ही जुटा नहीं पा रहे थे। प.पू. गुरुजी को वे कभी 'हाँ' तो कभी 'ना' करते रहे और सोचते रहते कि कैसे हो पाएगा? मेरे पास पैसों की व्यवस्था भी नहीं, व्यापार चलेगा या नहीं – वगैरह सोचते रहते। आख़िर एक दिन प.पू. गुरुजी ने उन्हें कहा कि ऐसा करते हैं कि तू अपना व्यापार शुरु कर... मैं एक साल तक तेरे घर का 'खर्चा' मंदिर से दूँगा – जब तक तुम्हारा व्यापार सॅट नहीं हो जाता!

प.भ. वच्छराजजी ने कपड़े का अपना व्यापार शुरु किया... व्यापार जल्दी ही सॅट भी होने लगा... इसी व्यापार से उन्होंने अपना खुद का मकान-गाड़ी सब कुछ खरीद लिया। प.भ. वच्छराजजी आज कहते भी हैं कि ३०० रूपये की नौकरी में मैं कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था कि दिल्ली जैसे शहर में मेरा अपना मकान होगा।

हम विचारें कि – कैसे भक्तवत्सल गुरु हमें मिले हैं, जो हमारी आध्यात्मिक जिम्मेदारी के साथ-साथ व्यवहारिक जिम्मेदारी – और तो और, शारीरिक स्वस्थता की जिम्मेदारी उठाने भी वे हर पल तत्पर हैं...

★ पिछले वर्ष १८ मार्च, शनिवार की शाम को प.पू. गुरुजी को पता चला कि **सेवक अभिषेक** को बुख़ार आया है और **अक्षरज्योति** के भी **दो-तीन मुक्तों** को 'वायरल' हुआ है; तो प.पू. गुरुजी ने उसी

समय प.भ. प्रकाशभाई से 'सुदर्शन घनवटी' – एंटी वायरल आयुर्वेदिक गोलियों का डिब्बा मंगाया और शनिवार की सभा के बाद गोलियों को ठाकुरजी को लगवा कर –

'रात को ही भूले बिना यह दवाई खाकर ही सोना...'

यह सेन्टेन्स ख़ुद ही बोल-बोल कर सब भाईयों को दी! यह देख कर सहज ही विचार आता है कि प.पू. गुरुजी सब की आत्मा का जतन तो करते ही हैं, पर सब भक्तों की देह की भी उन्हें कितनी अधिक फिक्र है? हर एक को एक ही वाक्य बोल-बोल कर देने में उन्हें कितना श्रम पड़ा होगा? हम उनका ऋण कैसे उतार पाएंगे?

★ अबकी–१ सितंबर को **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** और **प.भ. अनिलभाई माणिक** मुंबई से दिल्ली आ रहे थे। तभी उन्हें २ सितंबर को प.पू. गुरुजी के जयपुर जाने का कार्यक्रम पता चला। सो, प.भ. ओ.पी.अग्रवालजी ने प.पू. गुरुजी को पूछा कि 'हम फिर दिल्ली जाने के बजाय जयपुर ही पहुँच जाएं?' प.पू. गुरुजी ने हाँ तो करी ही; इससे भी अधिक – रेल्वे का टाईम टेबल देख कर उन्हें जयपुर के लिए ट्रेन के समय इत्यादि के बारे भी बताया। यूं वे दोनों टिकिट बदलवा कर जयपुर जाने निकले।

इन दिनों सूरत में 'चिकनगुनिया' फैला हुआ था। सो, खूब चिंता करते हुए प.पू. गुरुजी ने प.भ. अनिलभाई माणिक को फोन पर खास सूचना दी कि – सूरत स्टेशन पर कुछ खाने-करने मत उतरना। यह बात सुन कर प.भ. अनिलभाई मणिक व प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी सन्न से रह गए कि हमारे लिए कितनी छोटी-सी चीजों का प.पू. गुरुजी ख्याल रखते हैं!

इस तरह प.पू. गुरुजी द्वारा की गई परवरिश मुक्तों की आत्मा को सीधी छू जाती है और प.पू. गुरुजी से हुई दृढ़ प्रीति उन्हें अपने स्वभाव-प्रकृति, वृत्तियों को ठुकरा कर प्रभु मार्ग पर अग्रसर होने प्रेरित करती है। प.पू. गुरुजी को देख कर कई बार लगता है कि खूब नरम, साफ, अत्यंत विशाल व दयालु दिल देकर महाराज ने उन्हें अक्षरधाम से हमें सुखी करने धरती पर भेजा हैं।

हम सुनते भी हैं कि हर प्रकार के संकुचित दायरों से ऊपर उठ कर सच्चा गुरु 'आकाश' जैसी विशालता का प्रतीक है। अपने आश्रितों के लिए तो आधी रात को उनके सुख-दुःख में वो खड़ा रहता ही है, पर पूरे विश्व के मानवमात्र के लिए भी उसकी भावना-दया ऐसी ही रहती है।

हमने कई बार देखा है कि टी.वी. पर किसी के साथ बीती दुर्घटना देख कर – जैसे कि पूर्व केंद्रिय मंत्री स्व. प्रमोद महाजनजी जिन्होंने प.पू. काकाजी महाराज की डाक टिकिट जारी करने मंजूरी दी थी; उन्हें जब गोली लगी, तब उन्हें टी.वी. पर जिदंगी और मौत के बीच झूझते हुए देख कर-सुन कर प.पू. गुरुजी का हृदय गिलगिला हो जाता था। इसी प्रकार कहीं पर भुकंप या बाढ़ या ट्रेन एक्सीडन्ट वगैरह देख कर भी प.पू. गुरुजी की आँखें एकदम नम हो जाती भी हमने देखी हैं।

प.पू. गुरुजी ने १ दिसंबर से १० दिसंबर तक का मुंबई और सुरत जाने का कार्यक्रम बनाया था। नौ दिसंबर को हमारे **आत्मीय वडील प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** के साथ प.पू. गुरुजी व सभी 'उकई डॅम' गए। यह वही डॅम था, जहाँ पिछले वर्ष खतरे के निशान से ऊपर पानी आने के कारण बाँध का पानी छोड़ना पड़ा था और सूरत में बाढ़ आ गई थी। इससे सूरतवासियों को बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ा और इर्रिपॅरेबल नुकसान भी झेला। सो, यह सारा डॅम देखने के बाद सर्किट हाऊस में वापिस आते हुए प.पू. गुरुजी ने एक जगह बैठ कर इस प्रार्थना से धुन करवाई कि –

अब दोबारा कभी ऐसी परिस्थिति सर्जित ना हो और ऐसा निर्णय दोबारा ना लेना पड़े – उसके लिए प्रभु को प्रार्थना करें...

यूं , **विश्ववात्सल्य को भी प्रदर्शित करती प.पू. गुरुजी के अंतर की यह भावना सभी के हृदय को छू गई!**

दूसरी ओर – प.पू. गुरुजी के हृदय की एकमात्र चाहना हमेशा यह भी रही है कि हम किसी मंत्र–तंत्र, ग्रह–नक्षत्र-पनौती, बाह्य व्यसन के चुँगल में ना फंस कर केवल प्रभु का ही आधार लेकर, उनके ही बल से जिएं। मात्र प्रभु के भजन का ही व्यसन रख के उनका कर्ता-हर्तापन मान कर अपनी समस्त चिंताएं उन पर छोड़ दें...

प.पू. गुरुजी की ये बात सब के अतःकरण पर कैसा अनोखा प्रभाव डालती है, उसका दर्शन निम्न प्रसंगों से होता है।

★ **प.भ. निशिथ मिश्राजी** व अन्य कई मुक्तों ने जब प.पू. गुरुजी के प्रवचनों में सुना कि –

'सच्चे संत मिलने के बाद,
ज्योतिष पर भरोसा करना
या
हाथों में राशियों के मुताबिक नगों की अगूंठियाँ वगैरह पहनना
या
ग्रह-पनौती आदि से डरना व्यर्थ है।
हमें तो प्रगट प्रभु के संबंध से निर्भय व निश्चिंत रहना है।'

तो, उन्होंने प.पू. गुरुजी के बिना कहे ही अपने हाथों में मूंगा, पन्ना इत्यादि की अगूंठियाँ वगैरह पहननी छोड़ दी!

★ प.पू. गुरुजी ने संबंध में आए मुक्तों को कभी भी यह नहीं कहा कि तुम शराब पीना छोड़ दो, माँस खाना छोड़ दो या गुटका - पान मसाला खाना छोड़ दो। लेकिन, मुमुक्षु मुक्त से वे खुद ऐसा लगाव करते हैं कि मुक्त अपने आप ही सालों से चिपके 'व्यसन' सहज ही छोड़ देते हैं। और तो और, भीतर से भी वह व्यसन की लालसा निकल जाए उसके लिए भजन द्वारा प.पू. गुरुजी से बल लेते हैं।

दिल्ली सत्संग समाज से करीब दस साल से जुड़े मुंबई निवासी **प.भ. निरंजनभाई** एवं **प.भ. अनिलभाई मणिक** ऐसे ही मुक्तों में से हैं जिन्होंने गुटका खाने की अपनी सालों पुरानी आदत सहज ही छोड़ देने दृढ़ संकल्प कर लिया। वे कहते हैं कि –
अधिकतर लोगों को ऐसी आदतें छोड़ने खूब दिक्कत आती है और उन्हें छोड़ने वे दूसरे कई उपाय ढूँढते हैं। जबकि हमें तो अब ख्याल ही नहीं आता कि हमें ऐसी आदत भी थी!

प.पू. गुरुजी जीव को लगाव कराने पहले जीव की कक्षा पर आकर उसको अपना बनाते हैं और फिर प.पू. गुरुजी के इस अत्यधिक परिश्रम को देख कर जीव उन्हें राजी करने की एकमात्र भावना से अपने स्वभाव छोड़ने की कोशिश करने लगता है। यह है सत्पुरुष की कल्पना से परे की निराली रीति-नीति!

★ २५ जनवरी ' को **प.भ. कमलदेवजी** के बेटे 'जोगी' के जन्मदिन निमित्त प.पू. गुरुजी **लुधियाना** जा रहे थे और २७ जनवरी की शाम तक प.पू. गुरुजी दिल्ली लौटने वाले थे–क्योंकि २७ जनवरी की सायं ही **प.भ. राजुभाई शाह** की भतीजी **'भाविका'** की शादी थी।

प.भ. राजुभाई शाह खूब सॅन्सीटीव व्यक्ति है। चिंता करा करने का उनका सहज स्वभाव है। गाड़ियों की सॅटिंग इत्यादि चल रहा था कि प.पू. गुरुजी ने लुधियाना के लिए निकलने से पहले प.भ. राजुभाई शाह को फोन करवाया कि – लुधियाना जाने के लिए एक गाड़ी और ले जानी पड़ेगी और ड्राईवर की जरुरत है, तुम आ पाओगे? प.भ. राजुभाई ने तुरंत हाँ भर दी। बहनों ने उन्हें कहा भी कि २७ की शाम को प.पू. गुरुजी वापिस आने वाले हैं और उसी दिन तो भाविका की शादी भी है। तब भी वे यही बोले कि –
कोई हर्जा नहीं, सब मॅनेज हो जाएगा और गुरुजी ही तो सब संभालने वाले हैं, फिर चिंता क्यों करनी?

और... **प.भ. राजुभाई** ने तो अपनी पत्नी **सौ. बीनाभाभी** को अपनी बॅग तैयार करने के लिए कह भी दिया। प.पू. गुरुजी की आज्ञा मानने में मददरूप होने

सौ. बीनाभाभी भी बोलीं –

मैं आपके कपड़े शादी के लिए आए 'संजय' (सौ. बीनाभाभी के भाई) की बॅग में भर देती हूँ, ताकि घर में किसी को आपके लुधियाना जाने बारे फिलहाल शक ना हो; बाद में सारा मैं संभाल लूँगी।

प.भ. राजुभाई की यह बात सुन कर मंदिर में बैठे सभी हैरान हो गए कि जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों पर इतना चिंतित हो जाता हो, वह ऐसे मौके पर यूं निश्चिंतता से सब कुछ प्रभु पर छोड़ कर जा रहा है?

ऐसे प्रसंगों से पता चलता है कि प.पू. गुरुजी ने हर एक मुक्त के दिल में कैसा स्थान लिया होगा? समाज भी आध्यात्मिकता में कितनी तरक्की को पाया है और... सहज ही लगता है कि केवल भजन में गाने के लिए नहीं, पर ऐसे मुक्त भी हैं जो कि दिल की सच्चाई से मानते हैं कि – **'निश्चिंतता मिली उस दिन से हमें, जिस दिन से मिला है तू...'**

आज प.पू. गुरुजी का उद्यम यही है कि प.पू. काकाजी के सिद्धांत से **एक-दूसरे के पूरक बन कर जीते इस दिव्य समाज में 'कुटुंबभाव' व्यापक हो।** और... उनकी ऐसी भावना व परिश्रम से ऐसे मुक्त समाज को तैयार होता देख कर हृदय गद्गद् हो जाता है।

★ **प.भ. अजय चावलाजी** की चुराई गई 'सूमो' गाड़ी के बीमे का क्लेम करीब सवा लाख रूपये आया; तो उन्होंने वे रूपये सीधे प.पू. गुरुजी को अक्षरज्योति के निर्माणाधीन भवन के लिए लाकर दे दिए। इस बारे घर पर अपनी माताजी और पत्नी को बताया तक नहीं! इससे भी अधिक, उसी दौरान प.पू. गुरुजी ने उनकी पत्नी सौ. पूजाभाभी को कहलवाया कि *एक साल तक कोई महंगी साड़ी या गहने वगैरह नया लेना नहीं, जब तक बहनों का भवन बन कर पूरा ना हो जाए।* सौ. पूजाभाभी ने भी तुरंत वह पक्का कर दिया!

★ गुजरात एपार्टमेन्ट्स के **प.भ. विजयभाई महेता** व **सौ. रश्मिभाभी** की शादी की सालगिरह थी। जगत में परिवार के सदस्य ऐसे मौके पर रॅस्तरां में पार्टी करना या फिल्मी गानों पर नाच कर खुशी जाहिर करते हैं। लेकिन प.पू. गुरुजी की कथा बच्चों के जेहन में कितनी उतरी होगी कि प.भ. विजयभाई महेता के बच्चे **निश्चय** और **रिद्धि** ने आस-पास के सभी भक्तों को **रात के पौने बारह बजे** चुपके से फोन किए कि आप सब सरप्राईझ देने हमारे घर पर मम्मी-पापा की एनीवर्सरी सॅलिब्रेट करने आओ। सभी हरिभक्त पहुँच गए और भजन करके केक काट कर आनंद किया!

प.पू. गुरुजी या प.पू. दीदी के फोन करने पर तो यूं सब इकट्ठे हो जाएं, पर सिर्फ छोटे बच्चों के कहने पर सब का इकट्ठा हो जाना... यह दृश्य देख कर प.भ. विजय महेता व सौ. रश्मिभाभी की आँखों में भी पानी आ गया कि **प.पू. गुरुजी के संबंध से हमें कैसा दिव्य समाज मिला है!**

बाहरी तौर पर प.पू. गुरुजी का हर वर्तन खूब ही सामान्य-सा लगता है। परंतु वे निर्मल, पवित्र व निर्गुण क्रियाएँ संबंध में आने वाले के चैतन्य को प्रभु के मार्ग पर अग्रसर होने प्रेरित करती है। यूं वे हर एक के लेवल पर आकर, समझा कर या डाँट कर भी उसे प्रभुसम्मुख करने का एकमात्र उद्यम कर रहे हैं।

★ प.पू. गुरुजी ने महापूजा में एक बार टूथ ब्रश रखवा कर अमदावाद-मुंबई से आए हरिभक्तों के छोटे बच्चों को दिए और 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करते हुए रोज ब्रश करने कहा। देखने में, यह एकदम छोटी-सी बात है। पर, इसका मर्म प.पू. गुरुजी ने सभा में ही बताया था कि –

छोटे बच्चों को मैं टूथ ब्रश इसलिए देता हूँ कि – 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करते-करते ब्रश करेंगे, तो सुबह-सुबह प्रभु को याद तो करेंगे।

आज के मशीनी एवं पाश्चात्य युग में बच्चे क्या – बड़ों से भी आशा नहीं करी जा सकती कि वे दो पल भी प्रभु का स्मरण कर लें। वहाँ प.पू. गुरुजी छोटे बच्चों के साथ छोटे बन कर, युवान के साथ युवान बन कर और वृद्ध के साथ वृद्ध बन कर गरजु बन रहे हैं।

★ करीब छः-सात साल से प.पू. गुरुजी ३१ दिसंबर की रात्रि को १२:०० बजे श्री ठाकुरजी के दर्शन-आरती करवा कर नए वर्ष में भक्तों का प्रवेश करवाते थे। पर, पिछले दो वर्षों से वे **'मध्यरात्रि महापूजा'** का आयोजन करवा कर दिव्यता से भरपूर माहौल में नए वर्ष का स्वागत करवाते हैं। अबकी बार भी महापूजा का आयोजन था। दिल्ली मंदिर से खूब नज़दीक से जुड़े **प.भ. सुशील भास्करजी** के यहाँ इसी दिन गुड़गाँव से किसी पार्टी का निमंत्रण आया था और इन्हीं दिनों उनके कोई रिश्तेदार भी आए हुए थे। वे खुद तो वहाँ नहीं गए, लेकिन बीस-इक्कीस साल के अपने पुत्र **प.भ. राहुल** को उनके साथ भेजा। वो पार्टी में गया और रात को बारह बजे लाईट्स बंद होने पर तुरंत एक कोने में जाकर उसने दो मिनिट धुन करी व जेब में रखी श्री ठाकुरजी की – प.पू. गुरुजी की मूर्ति निकाल कर दर्शन कर लिए। घर आकर उसने अपने मम्मी-पापा को कहा कि –

'अबकी बार तो आपने मुझे भेज दिया। पर, आगे से मैं कभी ऐसी पार्टियों में नहीं जाऊँगा, मुझे वहाँ घुटन हो रही थी। हमें कितना अच्छा स्थान मिला है... प.पू. गुरुजी मंदिर में जो महापूजा करा कर ठाकुरजी के जो दर्शन कराके नए वर्ष की शुरुआत करवाते हैं, उसमें दरअसल कितना मजा आता है।'

बेटे की ऐसी बातें सुन कर प.भ. सुशीलजी-सौ. मीरांभाभी का हृदय तो हर्ष और निश्चिंतता से गिलागिला हो गया कि प.पू. गुरुजी के संबंध से हमारे बच्चे इस रंगीले जगत में भी कितने सुरक्षित हैं! सच, प.पू. गुरुजी इस बीस साल के युवक के हृदय में किस कदर बस गए होंगे ना! करोड़ों रूपये से भी ऐसे संस्कार खरीदे जा सकते हैं क्या?

दरअसल तो प.पू. गुरुजी रोक-टोक कर के भी हमारी व्यवहारिक व आध्यात्मिक प्रगति कराते हैं। पर, कई प्रसंगों पर **हम सोचने लगते हैं कि इन्हें तो अब हमारी कुछ पड़ी ही नहीं है। अब तो इनका हम से काम निकल गया... अब तो हम पुराने हो गए, अब तो हमारी जरुरत नहीं रही।** पर, हम विचारें कि प.पू. गुरुजी को हम से क्या स्वार्थ? जबकि उनका रात-दिन का भजन हमें विषय-वासनाओं की चुँगल से छुड़वा कर परम सुखी करने ही तो है।

प.पू. गुरुजी की जीवनशैली तो पहले से ही ऐसी रही है कि किसी ने उनके लिए थोड़ा भी किया होगा, तो वे उसे कई गुणा करके लौटा देते हैं। कभी किसी का ज़रा-सा किया हुआ भी वे भूलते नहीं हैं।

प्रसिद्ध पार्श्व गायक प.भ. महेन्द्र कपूरजी प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती पर व प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन पर नासाज़ तबियत में भी दिल्ली आए थे। अभी-अभी इस बार जब प.पू. गुरुजी को पता चला कि प.भ. महेन्द्र कपूरजी ने घुटने का आप्रेशन कराया है और तबियत कुछ ऐसी बिगड़ी – जो ब्रीधींग प्रॉब्लॅम दे रही थी। तो, तुरंत प.पू. गुरुजी ने उन्हें देखने जाने का प्रोग्राम बनाया... १० मार्च' की सुबह तो फ्लाईट से मुंबई पहुँचे और उन्हें मिल कर रात की फ्लाईट से दिल्ली लौटे!

अरे! केवल संबंध वाले भक्तों के प्रति ही नहीं, बल्कि प्राणीमात्र के साथ भी उनकी ऐसी प्रतिक्रिया कई बार झलकती है...

१९९२ में छपैया यात्रा के लिए प.पू. गुरुजी व मुक्त समाज गया था। तब दिल्ली लौटने के लिए फैज़ाबाद स्टेशन जब पहुँचे, तो पता चला कि ट्रेन लेट है। प.पू. गुरुजी थके हुए थे, सो स्टेशन की बेंच पर ही थोड़ी देर सो गए। फैज़ाबाद व अयोध्या में बहुत बंदर होते हैं। आमतौर पर वे यात्रिकों का सामान इत्यादि खींच कर परेशान भी करते रहते हैं और तरह-तरह की आवाज़ें भी निकालते रहते हैं। पर, प.पू. गुरुजी वहाँ बेंच पर सोए हुए हैं – यह देख कर आस-पास के सारे बंदर एकदम शांत हो गए; इतना ही नहीं – एक बंदर दूसरे बंदर को मुँह पर उंगली रख कर इशारे से चुप रहने कहता और वे सभी मानो प.पू. गुरुजी के दर्शन कर रहे थे।

और... अब की बार छपैया से वापसी में प.पू. गुरुजी

व सभी मुक्त अयोध्या स्टेशन से ट्रेन पर चढ़ने वाले थे। यहाँ स्टेशन पर आकर पता चला कि ट्रेन आधा-पौना घंटा लेट है। प.पू. गुरुजी ने प्लेटफार्म पर अपना टेबल खुलवा कर, उस पर अमरूद कटवा कर रखवाए, जिससे कि बंदर उन्हें देख कर खाने के लिए ले जाएं। कम से कम आधा-पौना घंटे तक यह चरित्र चला।

दिल्ली आकर प.पू. गुरुजी के इस जेस्चर का बातों-बातों में रहस्य पता चला कि उन्होंने बंदरों को इसलिए एन्टरटॅईन किया था कि १९९२ में बंदरजाति ने शोर ना मचा कर उन्हें विश्राम करने दिया था!!

वाकई, **साधु की हर क्रिया के पीछे एक गहरा रहस्य होता है, जो हमारी व्यवहारिक बुद्धि परख नहीं पाती।** बाहरी रूप से – मायिक चक्षुओं से हम साधु की क्रिया का मूल्यांकन करते हैं, पर साधु की विशाल भावना-उसका रहस्य समझने **हमें अपने जड़ मन की अपेक्षा साधु का ही अधिक भरोसा रखना चाहिए।**

यहाँ सहज ही प.पू. गुरुजी द्वारा बताई गुरुहरि योगीजी महाराज की एक बोधकथा याद आती है। एक बार एक भँवरा अपने दोस्त 'गींगे' को फूलों का रस चखाने बगीचे में ले गया... पर गींगे को भँवरे पर भरोसा नहीं था। वह साथ में अपने नाक में गटर की दो गोलियाँ डाल कर ले गया। सो, भँवरे के बताए मुताबिक उसे कहीं भी खुश्बू नहीं आई। भँवरे ने तरकीब लगाई। स्नान कराने के बहाने वह गींगे को तालाब पर ले गया। गींगे को डुबकी लगवाई, तो गटर की वो गोलियाँ गींगे की नाक से निकल गईं और तब उसने सुंगध का आनंद लिया। इसी तरह प.पू. गुरुजी हमें **मुक्तों के साथ के आपसी मेलजोल से-अपने संबंध से प्रभु की मूर्ति का सुख दिलाना चाहते हैं। पर, हम अपने मन में 'जगत' भरे रखते हैं। सो, वो आनंद ले नहीं पाते।** सच में प.पू. गुरुजी ने तो हमें सब प्रकार से सुखी करने में कोई कमी नहीं रखी, पर हमारे लेने में ही कसर है।

हम सब बोलते जरुर हैं कि सब कुछ महाराज ने कर दिया... प.पू. काकाजी की कृपा से ही हो पाया; पर भीतर के एक कोने में यह भावना बनी ही रहती है कि हमारी काबिलियत-होशियारी-कला, हमारी मेहनत, हमारे बनाए-रखे अच्छे संपर्क से यह सब हो पाया है।

प.पू. गुरुजी ने एक बार अपनी बात करते हुए बताया था कि बापा को उन्होंने पूछा –

'पाँच – पाँच जन्म से जो कसर टालने आ रहा हूँ, वो कसर क्या?'

तब बापा ने जवाब दिया कि – ***'समझण' की कसर!***
*यानि – **प्रत्यक्ष स्वरूप को ही 'कर्ता – हर्ता' मानने में कसर!***

'मैं' का भाव – अस्मिता रहती है।

'मैंने बहुत सहयोग दिया। मैं था तो यह हो पाया... मेरे कारण यह संभव हो पाया। भगवान ने तो किया, फिर भी मैं था सो सब सॅटिंग हो पाया' –

जैसा यह 'स्व' का भाव टालना है।

प.पू. गुरुजी खूब **'लो प्रोफाईल'** रहते हैं, सो हम उन्हें पहचानने में गलती खा रहे हैं और समय-समय पर दी उनकी अद्‌भुत सूझ का स्वीकार नहीं करते हैं।

लेकिन जैसे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बातें पढ़ो या उनका जीवनचरित्र पढ़ो तो यह एहसास होता है कि जीव की प्रगति कराने वे निरंतर राह बताते रहते थे; यहाँ तक कि आधी रात को भी वे अनुपम सूझ देने झिझकते ना थे; उसी ढंग को अपनाते कहो या हमारे प्रति अत्यधिक लगाव के वश कहो – प.पू. गुरुजी ने अबकी अपनी प्रागट्यतिथि पर मध्यरात्रि को साढ़े बारह बजे मंदिर के निजी सेवकों व थोड़े हरिभक्तों के सम्मुख मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के समय का एक छोटा-सा निम्न **प्रसंग** पढ़वाया और इसे **लिख रख कर पूजा में रोज पढ़ लेने की हर एक सेवक को आज्ञा भी करी!**

'जूनागढ़ में एक बार मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद-स्वामिजी खूब गहराई की बात कर रहे थे। थोड़ी ही दूर

पू. केशव भगत स्वामिजी की बातें ध्यान से ना सुनते हुए शिक्षापत्री का पाठ कर रहे थे।

ये देख कर **पू. रामानुजाचार्यस्वामी** चिढ़ कर उनके पास गए और ऊँचे से बोले कि – ***वहाँ तेरा बाप बातें कर रहा है और तू यहाँ बैठ कर क्या पाठ कर रहा है ? ये बातें क्या हमेशा सुनने को मिलने वाली हैं ?***

यह सुन कर पू. केशव भगत तुरंत स्वामिजी के करीब जाकर बातें सुनने लगे। तब पू. रामानुजाचार्यस्वामी को अंतर्दृष्टि हुई कि मैंने खामुखाँ इसे ऊँची आवाज़ में कहा और फिर... उन्होंने पू. केशव भगत को राजी कर लेने की चेष्टा करी।

तब पू. केशव भगत ने कहा कि **आपने तो मेरी भलाई के लिए कहा था। मैं तो खुश हूँ, आप मुझे रोज टोकना...और इस दिन के बाद से पू. केशव भगत भी हमेशा स्वामिजी की कथा में हाज़िर रहते।'**

यह प्रसंग का मर्म समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने अनुपम सूझ दी कि –

*''**यदि हम सच्चे गुणातीत के हैं, तो यूं एक-दूसरे का सहज स्वीकार करें।** केशव भगत ने रामानुजाचार्यस्वामी को जो कहा कि आपने तो मेरी भलाई के लिए ही टोका – इस बात से स्वामिजी कितने राजी हो गए होंगे – जो कि यह प्रसंग इस पुस्तक में इतना विस्तारपूर्वक बताया गया है। इसी तरह हम एक-दूसरे को टोक सकें और स्वीकार करते हो जाएं तो काकाजी कितने राजी हो जाएं ? वही हम सच्चे काकाजी के! वर्ना तो कितना ही 'काकाजी-काकाजी' करा करें और यदि मुक्तों की बात का स्वीकार ना हो तो समझना कि हमारा मध्यबिन्दु 'काकाजी' हैं ही नहीं। **काकाजी सेन्टर में हों तो मुक्तों के सुझाव का सहज स्वीकार होगा। हम झुक जाएंगे – पीछे हठ कर लेंगे; इससे काकाजी राजी होंगे।***

*सभी जानते हैं कि **काकाजी को** ये **'एकता' खूब पंसद थी। राह देखे बिना, एक का काम दूसरा कर लें – वह 'एकता' कही जाए।** ऐसी 'एकता' रखे वो सच्चे काकाजी के और उसने काकाजी की शोभा बढाई! बाकी सारा दिन कितनी ही मज़दूरी करा करेंगे, उसका कोई अर्थ ही नहीं है...''*

सच, प.पू. गुरुजी यानि – जिन पर प.पू. काकाजी हर प्रकार का हक रखते। यहाँ तक कि भरी सभा में उन्हें कुछ भी कह सकते थे। यह हमारा खूब अहोभाग्य कि अपने प्राकट्य की तिथि पर निजी तौर से प.पू. गुरुजी ने यह सही दिशा बताई।

पर, अब हम हमेशा के लिए उन्हें यह अधिकार दे दें कि हमारा मूड देखे बिना भरी सभा में भी वे हमें सच्ची सूझ देने झिझके नहीं और...

जैसे उस समय मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की यथार्थ महिमा कई समझ नहीं सके थे, वैसी गलती हम ना खा जाएं... अब तक तो प.पू. गुरुजी ने ही हम से प्रीति करा करी है, लेकिन अबकी जो कृपावर्षा उन्होंने हम पर करी है उसे झेलने हम तत्पर रहें और हम उनसे सच्ची प्रीति कर लें – ऐसी **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** एवं **प.पू. दिनकरभाई** की मूर्ति की प्रतिष्ठा व **प.पू. गुरुजी** के **७०वें प्रागट्य पर्व** पर अंतर से प्रार्थना!

श्रीजी महाराज का प्राकट्य... एक अनूठी कल्याण योजना !

जीवों पर केवल करूणा करके अवतारों के अवतारी ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण 'चैत्र' की शुक्ला नौमी यानि – रामनौमी को संवत् १८३७ में अवनी पर पधारे। धरती पर भगवान श्री स्वामिनारायण का यह अवतरण संपूर्ण मानवजाति के लिए एक महान आशीर्वाद-अनुग्रहरुप ही है। जहाँ जरुरत लगी वहाँ जीवों को समाधि करवा कर अपने दिव्य स्वरूप की पहचान करवाई। अधिकांश तो उन्होंने निम्न से निम्नतर स्तर के मनुष्यों के साथ पारिवारिक-सा संबंध रखा और... अपनी पहचान करवाई। वर्ना जीवों की क्या कक्षा थी कि अक्षराधिपति को पहचान सकें! उनका केवल एक ही ध्येय था कि जीवों को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म की भक्ति करानी!

यूं, साधारण जनजीवन में परिवर्तन लाकर आम लोगों के लिए आत्मकल्याण की नई राह खोली। इस हेतु संत, आचार्य, मंदिर और शास्त्र बनाए। इससे भी अधिक साहित्य, संगीत और कला–जो कि जनजीवन के रसमय अंग हैं, उनमें भी पारलौकिक आनंद भर दिया!

उन्होंने समस्त भारत की यात्रा करी, सभी शास्त्रों को पढ़ कर उनमें जो कुछ श्रेयकारी, सत्य और सुखदायी था, वह स्वीकार्य रख कर अपने आश्रितों को वचनामृत एवं शिक्षापत्री के रूप में दे दिया। भगवान स्वामिनारायण का वचनामृत यानि अगम और गहन आध्यात्मिक रहस्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत करता एक विरल ग्रंथ; जिसे **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** तो **'अमृत'** कह कर नवाजते थे।

गुणातीत सत्पुरुष का सेवन किए बिना जीव गुणातीतभाव को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता। हमारा यह अहोभाग्य है कि जन्म-मरण के चक्कर में फँसी जीवात्मा को आत्यांतिकी मुक्ति की ओर चलाने भगवान स्वामिनारायण ने ऐसे गुणातीत सत्पुरुष की अक्षुण्ण परंपरा रखी। और... सत्पुरुष का सेवन किस प्रकार किया जाए, वह उन्होंने खुद कृपा करके समय-समय पर वचनामृत में जगह-जगह समझाया है।

आइए वचनामृत में निहित निम्न कुछ मुद्दों का मनन करें। साथ ही श्रीजी महाराज की जयंती निमित्त उन्हें प्रार्थना करें कि– हे महाराज! आपके जो भक्त हैं, उन्हें निर्दोष मान कर, उनमें आपका दर्शन करके आपकी अंतर की प्रसन्नता के पात्र बनें और आपके प्रगट स्वरूप को यथार्थ पहचान कर स्वयं को धन्य करें।

- जीव को अपने इष्टदेव–जो कि परमेश्वर हैं, उनके प्रति जितनी निष्ठा हो, उतना ही उसे आत्मा-अनात्मा का 'विवेक' रहता है। इष्टदेव के बल के बिना तो कोई साधन सिद्ध नहीं होता। (वच. ग्र.प्र. ५६)
- संत के समागमरूपी **'नैमिषारण्य क्षेत्र'** जहाँ दिखाई पड़े, वहाँ अतिदृढ़ मन से रहना। (वच. सा. ७)
- स्वयं को मिले भगवान के साक्षात् स्वरूप को सदा दिव्य साकार मूर्ति एवं सर्व अवतार के कारण – अवतारी मानना। (वच. ग.म. ९)
- कल्याण के लिए तो भगवान को सर्व कर्ताहर्ता जानना –यही है और जैसा परोक्ष भगवान रामकृष्णादि अवतारों का माहात्म्य जानते हैं तथा नारद, सनकादिक, शुकजी, जड़भरत, हनुमान, उद्धव इत्यादि परोक्ष साधु का जैसा माहात्म्य जानते हैं, वैसा ही प्रत्यक्ष ऐसे जो भगवान तथा उन भगवान के भक्त साधु का माहात्म्य जो समझे उसे कल्याण के मार्ग में कुछ समझना बाकी नहीं रहता। (वच. ग.म. २१)
- हमें तो भगवान की प्रसन्नता के लिए जन्मोंजन्म भगवान के भक्त की सेवा करनी है और यह जो हमारा निश्चय है, वह निश्चय आप भी रखना। (वच.ग.म.२८)
- भगवान के भक्त तो केवल **'ब्रह्म की मूर्तियाँ'** हैं; उनमें तो मनुष्यभाव लाना ही नहीं। (वच. ग.म.६३)

प्रार्थना पर्व... ४ मई!

४ मई... प्रगट ब्रह्मस्वरूप परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी के प्राकट्य का परम पवित्र दिन! श्री हरि द्वारा गुणातीत समाज पर अनहद् कृपा करके मौजरूप दिया अनमोल 'प्रसाद' अर्थात्– प्र.ब्र.स्व.हरिप्रसादस्वामिजी! संतो, युवकों, बहनों और गृहस्थों के प्राणाधार... खूब विचक्षण बुद्धि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज का अद्भुत सेवन करके उनके अंतर की प्रसन्नता तो पाई ही, साथ – साथ प.पू. बापा की मर्जी जान कर भगवत् स्वरूप प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की योजना में एक साथीदार की भाँति कंधे से कंधा मिला कर खूब सहायरूप भी बने! सो, सर्वप्रथम 'धन्यवाद-धन्यवाद' के शब्दरूपी पुष्पों से प.पू. स्वामिजी के चरणार्विंद में कोटि-कोटि वंदन!

गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपने इस पनौते शिष्य को कई कसौटियों से गुजारा और अग्नि में तप कर सोना जैसे अधिक चमकता है, यूं उनकी आंतरिक साधुता

का वैभव निखर कर आया। अनेक कठिन हालात से गुजरने के बावजूद भी प.पू. स्वामिजी ने प.पू. बापा के प्रति कभी भी मनुष्यभाव–मायिकभाव आने नहीं दिया। जहाँ भूल लगी, वहाँ गुरुहरि योगीजी महाराज के छोटे-से सूचन को जीवन का लक्ष्य बनाया। गुरुहरि योगीजी महाराज के एक-एक शब्द को जीवन में घोट कर सतत् अंतर्दृष्टि करी। कभी भी बापा को मोहताज़ नहीं करा। और आज... परब्रह्म को अखंड धार कर संबंध में आए जीवों को वे मौज में भगवान की मूर्ति बाँट रहे हैं। इनकी दिव्य और कल्याणकारी प्रतिभा हमें जगत की माया से छुड़वा कर – जड़ कोटि के बंधन तुड़वा कर गुणातीतभाव में रहता कर देती है। उनकी गुरुभक्ति और स्वरूपनिष्ठा के दिव्य तेज से आज भूमंडल में चारों ओर दिव्यता फैल रही है... उनके अनथक् परिश्रम का – कार्य का सम्यक् परिचय उनके द्वारा तैयार हुआ समाज दे रहा है। ऐसी दिव्य विभूति के जितने गुण गाएंगे उतने कम ही कहे जाएं। हाँ, यदि हम उनकी बातों का तात्पर्य समझ कर उस राह पर चलेंगे तो – प.पू. स्वामिजी को खूब जँचता '**गुणातीत विवेक**' हम में दृढ़ हो जाएगा।

प.पू. स्वामिजी से हम अकसर सुनते भी हैं कि –

साधक यानि – विनम्र और सरल!

इसी हेतु उन्होंने ही वर्षों पूर्व कृपा करके हमें निम्न सात मुद्दे बताए... खूब आनंद की बात यह है कि प.पू. स्वामिजी का **अमृत वर्ष** चल रहा है... वे तो हम सभी को आत्मा के सुख से सुखी करने अमृत वर्षा लुटाने ही लालायित बैठे हैं। आइए, उनके अमृत वर्ष निमित्त इनके द्वारा दिए सात मुद्दों को आत्मसात् करके सदा-सर्वथा प्रभु के सुख से हम सुखी हों...

१. वच. मध्य ३२ के मुताबिक प्रगट स्वरूप में **सर्वोपरि कर्तापन** का और **दिव्यता** का भाव दृढ़ करके स्वरूपयोग और स्वरूप उपशम के रूप में **धाम, धामी और मुक्त की प्रगट की निष्ठा** युक्त अचल भक्ति करा करना।

२. प्रगट भगवान और प्रगट भगवान के एकांतिकों को यथार्थ पहचान कर प्रगट के संबंध वाले सभी के गुणगान ही गाना और सुनना व ऐसी रूचि वाले दो जने मिल कर ज्ञानगोष्ठि करा करना। हर रोज एकाग्रचित्त से **कथावार्ता** का दो बार लाभ लेना।

३. जहाँ हैं वहाँ संबंध वाले मुक्तों में **सुहृद्भाव** दृढ़ करना।

४. 'छोटे से हो छोटे रहीए...' यह साखी के मुताबिक दासभाव से वर्तने की आदत डालनी और हर एक क्रियायोगों में सर्वोपरि कर्तापन प्रगट स्वरूप का मान कर **भगवान की बुद्धि से सेवा** करना। वहाँ जबरन् कसनी सहने की चाहना रखनी। इसे ही 'भक्ति' मानना और मुक्तों द्वारा करी 'रोकटोक' को निगल कर सहने की सहज ही आदत डालते हुए निर्मानीभाव से वर्तना।

५. मन का अमन हो–वहाँ पू. गुरुहरि को ही देखना और अंतःर्दृष्टि करके प्रार्थना करना। दूसरा कोई आधार लिए बिना या आकार देखे बिना 'स्वामी-स्वामी' किया करना। तो, आगे-पीछे भगवान का कर्तापन दिखाई देगा और उनकी 'लीला' को देखते ही शांति हो जाएगी।

६. गुणातीत पुरुषों की तरह **सर्वदेशीय समझदारी-** 'हम अखंड अक्षरधाम में बैठे हैं और ये मुक्त भी अक्षरधाम के ही हैं' – समग्र सत्संग को दिव्य मानने की ऐसी ज्ञानदृष्टि हम में खिल उठे इस हेतु प्रमाणिक रूप से परिताप करके गुरुहरि को प्रार्थना करके ही रात को सोना।

७. गुरुहरि की अनुवृत्ति और अभिप्राय के मुताबिक ही अखंड जीवन जीने के लिए मूलवृत्ति जल्दी से टल जाए, उसके लिए बड़े संत के वचन से गुरुहरि की प्रसन्नता के लिए एकाध **सत्कर्म** करने का रवैया रखना और आदत डालनी। फलस्वरूप जीतेजी अखंड अक्षरधाम का सुख लेते हो जाएंगे।

ऐसी गुणातीतभावना दृढ़ हो और नियमित रूप से वर्ता जाए इस हेतु प्रगट स्वरूप और साकार गुणातीत मुक्तों को अंतर से प्रार्थना।

– प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की ज्ञानगोष्टि में से

❋ 'बड़े घर दीवाली शिविर' के मननीय ब्रह्मसूत्र ❋

❋ अपनी जोड़ को अपने से थोड़ा विशेष समझकर, उसके पास सरल रहना।

❋ हमारे मन को तोड़ कर ब्राह्मीस्थिति प्राप्त कराने वाले ऐसे सत्पुरुष कहां मिलने वाले हैं?

❋ हमारी यह महापूजा तांत्रिक है।

❋ कोई भी कार्य - प्रवृत्ति - कारोबार का आरंभ करने से पहले **'प्रार्थना'**१ करना,
फिर **'योजना'**२ बनाना और फिर **'चर्चा-विचारणा'**३ करना।
यह है सुलटा क्रम।
जबकि हम अकसर पहले **'चर्चा-विचारणा'**३ करेंगे, फिर **'योजना'**२ बनाएंगे
और.....
आख़िर में आशीर्वाद पाने प्रभु से **'प्रार्थना'**१ करेंगे – **जो है उलटा क्रम!**

❋ सत्पुरुष की **'आज्ञा'** की अपेक्षा उनकी **'अनुवृत्ति'** बढ़ कर है। इससे अधिक उनका **'अभिप्राय'** है।
और.......
'मैं उनका प्रकाश हूँ' - ऐसी कॉन्सियसनेस में अखंड रह कर वर्तना इससे भी अधिक है।
पर,
संबंध वाले सभी को **'ब्रह्म की मूर्ति'** मान कर **उनके साथ 'सुहृद्भाव'** से रहना सर्वोत्तम है।

❋ प्रगट स्वरुप के प्रति वासना, यही है हमारी उपासना !

❋ 'प.पू. काकाजी तो वही की वही बात दोहराने वाले हैं। क्या नया है ?'
यह सोच भी सत्पुरुष के प्रति हमारा मनुष्यभाव है।

❋ **'संग'** यानि – मन जोड़ा। **'प्रसंग'** यानि – मन सौंपा।

❋ संत को हमारे साथ सच्चा लगाव है।
सो, वे हमारी आसक्ति और स्वभाव का खंडन करेंगे ही।
अतः ऐसे मौके पर दिल से उनके प्रति सद्भावना रखे रखना।

❋ सत्पुरुष के साथ का अंतर और अंतराय टालने के लिए
उनके मुक्तों में महाराज को देखना और उनके पास सरलता से वर्तना।
यह अनिवार्य शर्त है।

❋ प्रभु से जल्द से जल्द नज़दीकी पाने का एक उपाय है – प्रार्थना !
इसके बराबर कोई साधन नहीं है।

*– अ.नि. **मीना लेऊवा** द्वारा संकलित*

प.पू. काकाजी महाराज की कथावार्ता में से

‘श्रवण, मनन, निदिध्यासन’

*पिछले नवंबर में प.पू. गुरुजी ने **‘बड़े घर दीवाली’ – शिविर** में ‘योगीजी महाराज की सत्संग कथाएँ’ से कई प्रसंग पढ़वाए और... उन्हें विस्तारपूर्वक समझाया। दूर-सुदूर के हमारे आत्मीय मुक्तों प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई अनुपम सूझ का लाभ ले सकें – इस हेतु निम्न दे रहे हैं।*

✱ ये सारी बातें जो इस शिविर में होंगी.. वो खूब ध्यान से सुनना–समझना। ये कोई ‘अरेबियन नाईट्स’ की कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि महाराज के समय में, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के समय में घटी हुई सच्ची घटनाएँ हैं... उस समय के भक्तों ने जो जीवन जिया है, वह हम सब के लिए एक आदर्श है... हम सब के लिए दीवादाँडी बनी है कि इस रास्ते पर चलते हुए ऐसी भूल नहीं करना या फिर इस प्रकार जीना चाहिए।

✱ एक्च्युअली सत्संग में किस मोड़ पर कैसा वर्तना चाहिए या वो वर्तने में हमें हमारे स्वभाव, प्रकृति, मोह वगैरह कैसे आड़े आ जाते हैं, उसका दर्शन इन प्रसंगों से बहुत अच्छी तरह होता है। ये बातें खूब सामान्य लगती हैं, पर वही ऐन मौके पर पहाड़ जैसी बन कर हमारे सामने आकर खड़ी हो जाती हैं।

✱ हम ऊपर-ऊपर से शॉ ऑफ–दिखावा करते हैं कि हमें तो अब जगत के रिश्तों में कोई आसक्ति नहीं रही... पर कोई प्रसंग बनने पर भीतर से उन रिश्तों का खिंचाव किसी ना किसी रूप में निकल ही आता है। परंतु, यदि हम इन सभी से ज्यादा प्रभु को आगे रख कर जीते हों, तो सब कुछ ‘शॅड ऑफ’ हो जाए।

यह श्रीजी महाराज ने नई चीज निकाली। हम अपने एफर्ट्स से यह सब नहीं छोड़ पाएंगे... पर सत्संग में प्लॅन्टी से लगाव कर लें; तो, देह के रिश्तों का मोह कब और कैसे टल जाएगा–उसका पता भी नहीं चलेगा! प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी ने हमें सिखाने अपनी माँ – (पू. दीवाळीबा) के होते हुए पू. सोनाबा के साथ इतना अधिक लगाव कर दिया और बताया कि अपनी माँ के प्रति का मोह यूं कब टल जाता है, वो पता भी नहीं चलता।

✱ गुरुहरि योगीजी महाराज एक दृष्टांत देते थे कि – एक पुत्र ने अपनी बुढ़िया माँ को लगातार ‘कच-कच’ करते रहने के कारण घर से बाहर निकाल दिया। बुढ़िया घर के बाहर आँगन में ही बैठी रही... रास्ते में घास के पूड़े भरी एक बैलगाड़ी जा रही थी। बुढ़िया ने चुपचाप दो-तीन पूड़े पीछे से खींच कर चुरा लिए और लड़के को दरवाजा खटखटा कर पूड़े ले लेने आवाज़ मारी। पर, गुस्से के कारण लड़के ने दरवाजा खोला ही नहीं। तो, बुढ़िया ने ऊपर के रोशनदान में से घर के अंदर पूड़े डाले... इतना मोह कि – **‘मेरा लड़का...’** – जो उसे घर में रखने भी तैयार नहीं था!

ये मोह आसानी से नहीं टलेगा। पर, भगवान और भगवान के भक्तों में संपूर्णतया जुड़ जाएंगे, तो ये सारी चीजें कहाँ शॅड ऑफ या ड्रॉप आऊट हो जाएंगी उसका पता भी नहीं चलेगा और हम सुखी हो जाएंगे।

✱ जिसे भगवान और संत का माहात्म्यज्ञान के साथ निश्चय दृढ़ है, वही धन–धाम–कुटुंब के साथ महाराज को अपना सर्वस्व समर्पण कर सकता है।

✱ मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने तो अपनी बातों में इससे भी आगे कहे दिया है कि–

कोई सर्वस्व का समर्पण भी कर दे, लेकिन तीन देह (यानि– स्थूल, सूक्ष्म और कारण) के भाव टाल कर भजन करे, ऐसे तो कोई विरल ही होते हैं।

यह गुणातीतभाव प्राप्त करना बहुत अलग और ऊँचे लेवल की बात है।

ताड़देव की गतिविधियाँ....

'कुछ नया करके दिखाना है'... इस शीर्षक के अंतर्गत १९९५ में आप सभी ने पढ़ा होगा कि दिल्ली के गुजरात एपार्टमेन्ट्स् से प.भ. अनुभाई महेता ने प.पू. गुरुजी के वचन से अपने सुपुत्र **प.भ. परेशभाई** का विवाह खूब सादगी से **सौ. बीजल** के साथ अत्यंत भक्तिभरे व आनंदपूर्ण माहौल में दिल्ली मंदिर के ठाकुरजी समक्ष करवाया था। इसे देख कर हर एक मुक्त के कंठ से भूरि–भूरि प्रशंसा निकली थी। अरे! सत्संग के कई मुक्तों ने यही कहा कि 'विवाहोत्सव' इसी प्रकार सभी करें, तो कितना अच्छा रहे...

पर अब, इससे भी आगे प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के संबंध से जातिभेद, दहेज प्रथा, फिज़ूलखर्ची की रोकथाम करके प्रभुधारक संत को केन्द्र में रख कर जीवन जीता एक ऐसा समाज स्थापित हुआ है, जिसे देख कर आँखें हर्ष से नाच उठती हैं...

❋ दो दिन के अंतराल में ९ दिसंबर सन् २००४ में अक्षरनिवासी प.भ. नीलकंठभाई की सुपुत्री **सौ. स्मृति** एवं **प.भ. त्रुषारकुमार** का विवाह खूब सादगी से श्री ठाकुरजी के समक्ष संपन्न हुआ। और ... दिल्ली के मुक्तों का प.पू. गुरुजी के प्रति प्रेम, लगाव, वात्सल्य का सभी को दर्शन हुआ।

❋ ३ फरवरी सन् २००५ को प.भ. नवीनभाई के सुपुत्र **प.भ. आशिष** का विवाह सत्संग के आत्मीय प.भ. जयप्रकाशजी मल्होत्रा की सुपुत्री **सौ. धुन** से हुआ। प.भ. नवीनभाई 'गुजराती' और प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी 'पंजाबी' परिवार से हैं। पर, जीवन के केन्द्र में प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत का स्थान होने से गुजराती संस्कृति के परिवार में पंजाबी संस्कृति की लड़की का अत्यंत हर्षोल्लास से स्वागत हुआ। चूंकि दोनों ही परिवार प.पू. गुरुजी से खूब निजी तौर से जुड़े हुए हैं, सो इस विवाह संबंध के बाद वे मंदिर व प.पू. गुरुजी से और अधिक नज़दीक हो गए।

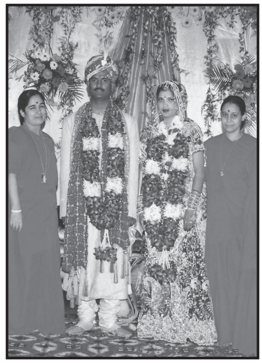

❋ इसी प्रकार १२ मार्च २००५ को प.पू. काकाजी के समय के हमारे पुराने जोगी प.भ. डॉ. जे.पी. शर्माजी के सुपुत्र **प.भ. विजय** का विवाह अभी-अभी संपर्क में आए अक्षरनिवासी प.भ. सतपाल विश्नोईजी की सुपुत्री **सौ. निवेदिता** से हुआ। दिल्ली के प.भ. विजयपालजी की साली सौ. सरिता उत्तर प्रदेश के जिस होस्टल में रहती थी, वहीं सौ. निवेदिता उसके कमरे की सहभागी थी। कमरे में उसने जब प.पू. काकाजी की मूर्ति देखी, तो उसे एक अद्भुत खिंचाव हुआ एवं भीतर में एक अलग निश्चिंतता महसूस हुई और आँखों से अश्रु बहने लगे... बस सत्संग के इतने ही परिचय से कु. निवेदिता प.भ. विजयपालजी व सौ. शशिभाभी के संबंध से कभी-कभार दिल्ली मंदिर आ जाती व सत्संग से जुड़ गई और नवपरिचित होने के बावजूद भी प.पू. दीदी के एक बार कहने पर उसने प.भ. विजय से विवाह करने हाँ करी; क्योंकि वह सत्संग से–प.पू. गुरुजी से खूब अपनेपन से जुड़ा हुआ है। यूं यह गठबंधन दो व्यक्तियों के बीच नहीं, बल्कि दिव्य कुनबे के दो परिवारों के बीच हुआ!

और...

❋ अभी थोड़े दिन पहले सत्संग के दो परिवारों के बीच यकायक जो विवाह संबंध स्थापित हुआ, वह तो मानो गुरु आज्ञा का आदर्श बना! सत्संग के आत्मीय **प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी** के सुपुत्र **प.भ. पुनीत** का रिश्ता हाल ही में ३० जनवरी की सायं **प.भ. सतीश शर्माजी** की सुपुत्री **सौ. श्वेता** से पक्का हुआ। सो, दोनों परिवारों ने ३ फरवरी – ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन रिश्ते की रस्म **'रोका'** करने का विचारा... हर वर्ष की भाँति **३ फरवरी** को प.पू. गुरुजी की निश्रा में महापूजा हुई और मंदिर का पाटोत्सव भी इसी दिन होने के कारण मूर्तियों का पूजन भी हुआ। महापूजा संपन्न होने के बाद दोनों परिवारों के बीच होने वाले रिश्ते के बारे जाहिर हुआ... शुभाशीष देते हुए प.पू. गुरुजी ने ३ फरवरी निमित्त प.भ. पुनीत को सौ. श्वेता के संग प.पू. काकाजी महाराज की पुष्प समाधि की सात परिक्रमा भी कर लेने आज्ञा करी और इसी में विवाह की रस्म का सर्जन हो गया! रिश्तेदार व मित्रमंडल वगैरह क्या कहेंगे? ऐसी कुछ भी परवाह किए बिना दोनों परिवारों ने 'लोक' को ठुकरा कर, बस प.पू. गुरुजी को राजी करने की एकमात्र भावना से विवाह उत्सव करने की सहमति जताई... दोनों पक्षों की मंजूरी देख कर प.पू. गुरुजी बोल उठे – ***यही सत्संग समाज की डॅवलॅपमेन्ट कही जाए। संत चाहे और मानो शायद कह भी दे कि ऐसा करो ; पर इनका वह मान लेना, इसे सत्पुरुष को माना कहा जाए।***

केवल दो घंटे के अंतराल में विवाह की सारी तैयारियाँ हो गईं। ठाकुरजी के प्रसादी के हार बन गए **'जयमाला'** और... जयमाला भी कैसी कि दूल्हे को प.पू. गुरुजी ने हार पहनाया, तो दुल्हन को प.पू. दीदी ने हार पहनाया और फिर वे ही हार दोनों ने एक दूजे को पहनाए! दूल्हे की घोड़ी के सामने नाचने वाले घराती ही बराती थे और बराती ही घराती थे। ये सभी केवल खून के रिश्ते के नहीं, बल्कि प.पू. गुरुजी द्वारा सर्जित नूतन दिव्य कुनबे के सदस्य थे–जहाँ किसी से कोई मनमुटाव की गुंजाईश ही नहीं थी। सभी अत्यधिक आनंद में मस्त होकर नाच रहे थे... प.भ. पुरी साहेब, प.भ. कपूर साहेब और प.भ. मल्कानी अंकल तक नाच उठे... सब कुछ खूब जल्दी में हुआ, लेकिन इतनी व्यस्तता में प.पू. गुरुजी ने एक छोटी-सी बात भी खूब ध्यान रखी। प.पू. गुरुजी ने कहा था कि प.भ. पुनीत और सौभाग्यकांक्षी श्वेता प.पू. काकाजी महाराज की पुष्प समाधि की सात परिक्रमा करें। पर, हिन्दू शास्त्रों में लिखा है कि अग्नि के समक्ष फेरे लेकर विवाह का गठबंधन किया जाता है; सो प.पू. गुरुजी ने **प.पू. दीदी को कहलवाया** कि– ***वहाँ समाधि पर दीपक जरुर प्रगटा कर रखवाना!*** यूं वहाँ पंडित द्वारा शास्त्रोक्त विधि से विवाह संपन्न हुआ। इस पूरी विधि दौरान प.भ. मल्कानी अंकल, प.भ. पुरी साहेब, प.भ. दालिया साहेब हाज़िर रहे...

प.भ. मल्कानी अंकल तो ३ फरवरी की महापूजा के लिए सुबह आठ बजे से आए थे। पर, खूब आश्चर्य था कि **कुनबे के एक 'बड़े' होने का एहसास कराते हुए वे सारा दिन अपनेपन से रुके रहे और सभी विधियों में शामिल भी हुए।** शाम को करीब छः बजे वे घर लौटे और इनका यह जॅस्चर सभी के दिल को भीतर तक छू गया! यूं एक ओर फॅमीली मेम्बर्स के शादी में पहनने के स्पेशियल ड्रेसीस, शामियाना, कॅटरींग, बेंडबाजे, लाईटिंग, आतिशबाजी वगैरह का फिजूलखर्च टल गया, तो दूसरी ओर दोनों परिवारों को प.पू. गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता की अनमोल पूँजी मिल गई... प.भ. मल्कानी अंकल को तो यह सारा नज़ारा इतना स्पर्श कर गया कि उन्होंने अपने भाव निम्न शब्दों में प्रकट करे...

Under the Spiritual Umbrella of P.P. GURUJI

&

Direct involvement of P.P. ANANDI DIDI...

An exemplary Marriage.

NO DOWRY, NO EXTRAVAGANCE !

ONLY HARMONY & DIVINE LOVE !!

Puneet & Shweta's wedding has set an example of a movement towards *'Vasudhaiva kutumbakam'* where the saying 'Family which prays together stays together' is justified. In all its suddenness, the entire ceremony was planned in a very short period of two hours and was conducted with a sense of togetherness in a joyous and Divine atmosphere. It appeared as if there were no Baratis – only wellwishing friends, relatives & satsangis who were overwhelmed with joy and were dancing. The procession and festivities were all within the Divine boundaries of the temple premises.

It was indeed a purely spiritual dowryless memorable wedding. There was no give and take. There were no burdens of extravagant expenses like Shamiana, banquet hall or catering. In this way, ritual expenses were all cut down. There was no demand between bride's and groom's family. Due to Divine intervention, both the bride and the groom and their families will always have an easy approach for harmonious settlement of any small or major grievances. The whole atmosphere was Divine. Both time and money were saved and the wedding was indeed graceful.

Even after marriage, continuous and joyous meetings of both the families will take place due to their regular visits to the temple for satsang and other spiritual–social ceremonies.

In the final analysis harmony, peace and prayers prevail. This is a real progress towards harmony and peace. Even in their house, harmony will prevail due to prayer and regular *'JAP'* – chanting of 'Swaminarayan Mahamantra'.

– Indru Malkani

प.पू. गुरुजी की दिव्य सेरेछाया

एवं

प.पू. आनंदी दीदी की निश्रा में हुआ आदर्श विवाह ।

जहाँ ना तो दहेजप्रथा थी, ना ही फिजूलखर्ची!

केवल था समन्वय और दिव्य प्रेम!!

प.भ. पुनीत एवं सौ. श्वेता के विवाह ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना प्रदर्शित करता एक अनुपम आदर्श स्थापित किया है। यहाँ कह सकते हैं कि – *'परिवार जो एक साथ प्रार्थना करता है, वह संयुक्त रहता है'* – यह उक्ति सार्थक हुई-चरितार्थ हुई! खूब जल्दबाजी में विवाह की सारी रस्म बहुत ही थोड़े समय में यानि – दो घंटे के अंतराल में ही संपन्न हुई! एकता से मिलजुल कर सभी ने इस उत्सव को आनंदमय व दिव्य माहौल में मनाया। ऐसा लगता था कि यहाँ बराती नहीं, बल्कि शुभचिंतक मित्र, एक ही कुनबे के सदस्य और सत्संगी थे, जो हर्षोल्लास से नाच उठे थे। मंदिर के दिव्य परिसर में ही सारी शोभायात्रा और उत्सव संपन्न हुआ।

वाकई, यह बिलकुल आध्यात्मिक दहेजरहित अविस्मरणीय विवाह था, जिसमें कोई आदान-प्रदान नहीं था, ना ही शामियाना, ना प्रीतिभोज के फिजूलखर्च का कोई बोझ था। यूं रूढ़ीगत रीति-रस्मों के टल जाने से 'क्रीमीनल वेस्ट ऑफ मनी' भी रूक गया। वर पक्ष व कन्या पक्ष के बीच भी किसी चीज की कोई माँग नहीं थी। वर-कन्या और दोनों के परिवारों के केन्द्र में भगवान व संत का स्थान होने के कारण भविष्य में भी किसी भी छोटी या बड़ी समस्या का हल हमेशा खूब आसानी से निकल आएगा। पूरा माहौल दिव्यता से भरा-भरा था। समय और पैसा दोनों की बचत हुई और फिर भी... विवाह बहुत ही आकर्षक एवं मनोरंजक रहा।

विवाह के बाद भी नियमित रूप से मंदिर में होती सत्संग सभाओं और अन्य उत्सवों में आते रहने के कारण दोनों परिवारों का लगातार आनंदपूर्ण मिलन होता रहेगा।

विश्लेषण के रूप में कहें तो–विवाह दौरान तो एकता, शांति और प्रार्थना बनी रही और आगे भी बनी रहेगी। सही मायने यही तो संवादिता और शांति की ओर कदम है। यहाँ तक कि उनके घर में भी प्रार्थना और 'स्वामिनारायण महामंत्र' के नियमित 'जाप' – के कारण समन्वय कायम ही रहेगा।

– इन्द्रु मल्कानी

Statement about ownership and other particulars about newspaper —

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

PRABHAKER RAO

Date: 15 March, 2007

Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	19.3.2007,	सोमवार	—	गुडी पड़वा
(2)	दि.	24.3.2007,	शनिवार	—	***ताड़देव मंदिर में यज्ञ – सुबह 9:00 से 12:00*** ***सत्संग सभा – सायं 6:00 से 9:00***
(3)	दि.	25.3.2007,	रविवार	—	***ताड़देव मंदिर में ब्र.स्व. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा – सुबह 9:00 से 12:00*** ***प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन का उत्सव – सायं 5:00 से 9:00***
(4)	दि.	27.3.2007,	मंगलवार	—	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(5)	दि.	29.3.2007,	गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(6)	दि.	31.3.2007,	शनिवार	—	गुरुहरि योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(7)	दि.	2.4.2007,	सोमवार	—	श्री हनुमान जयंती
(8)	दि.	14.4.2007,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(9)	दि.	19.4.2007,	गुरुवार	—	अखात्रीज
(10)	दि.	20.4.2007,	शुक्रवार	—	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(11)	दि.	28.4.2007,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(12)	दि.	30.4.2007,	सोमवार	—	नृसिंह जयंती
(13)	दि.	4.5.2007,	शुक्रवार	—	**प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(14)	दि.	13.5.2007,	रविवार	—	एकादशी – व्रत
(15)	दि.	14.5.2007,	सोमवार	—	**गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन**

**તમે બે મળીને જે કરો, એમાં હું આવી ગયો.
હવે પૂછવા આવશો નહીં.**

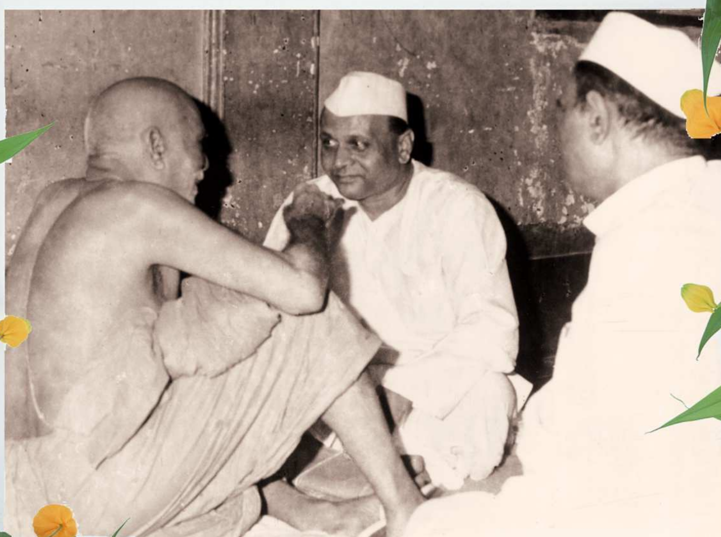

પ.પૂ. યોગીબાપા

અમારાં તો મઝિયારાં હૈયાં !

પ.પૂ. કાકાશ્રી

પંજાનો આગળનો ભાગ — દાદુ
અને
પંજાનો પાછળનો ભાગ — બાબુ

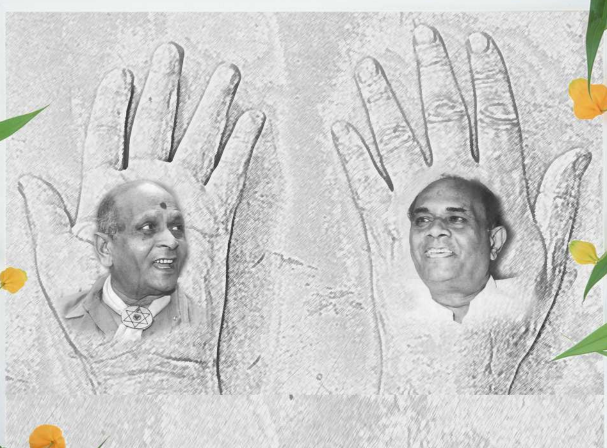

પ.પૂ. પપ્પાજી

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail :
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR*
YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327, *Printed at :* **Delux Offset Printers,** 308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi